

वेदांत दर्शन में मोक्ष की अवधारणा

वेदांत दर्शन में मोक्ष का अर्थ है जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति और आत्मा का ब्रह्म के साथ एकत्व का अनुभव करना। मोक्ष को आत्मा की शुद्ध, अविनाशी और अनंत अवस्था के रूप में माना जाता है, जहाँ आत्मा सभी बंधनों और दुखों से मुक्त होती है और शाश्वत शांति और आनंद का अनुभव करती है।

मोक्ष प्राप्ति के उपाय :

1. **ज्ञान योग** : वेदांत दर्शन में ज्ञान योग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आत्मा और ब्रह्म के संबंध को समझना और आत्म-ज्ञान प्राप्त करना मोक्ष की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। उपनिषदों और वेदांत ग्रंथों के अध्ययन और चिंतन से यह ज्ञान प्राप्त होता है।
2. **भक्ति योग** : भक्ति योग के माध्यम से ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण का भाव रखते हुए मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर की उपासना, ध्यान और प्रार्थना के माध्यम से आत्मा की शुद्धि होती है और ब्रह्म के साथ एकत्व का अनुभव होता है।
3. **कर्म योग** : कर्म योग के माध्यम से निःस्वार्थ कर्म करना और कर्मों के फलों का त्याग करना मोक्ष की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपाय है। इस मार्ग पर चलते हुए व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करता है और ईश्वर को समर्पित करता है।
4. **ध्यान और समाधि** : ध्यान और समाधि के माध्यम से आत्मा की शुद्धि और स्थिरता प्राप्त होती है। ध्यान के माध्यम से मन की शांति और आत्म-साक्षात्कार की दिशा में प्रगति होती है।

इन उपायों का पालन करके वेदांत दर्शन के अनुसार मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। मोक्ष की प्राप्ति से आत्मा ब्रह्म के साथ एकत्व का अनुभव करती है और सभी बंधनों और दुखों से मुक्त होकर शाश्वत शांति और आनंद प्राप्त करती है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी

सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग

शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय

बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण

मो0-9608685335

Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com